Indian Streams Reserach Journal
Vol.1,Issue.XII/Jan; 12pp.1-4 डॉ. साताप्पा शामराव सावंत ISSN:-2230-7850

Research Papers

रूपनारायण सोनकर लिखित 'नागफनी' आत्मकथा में अभिव्यक्त दलित संवेदना

डॉ. साताप्पा शामराव सावंत

प्रस्तावना :–

'नागफनी' रूपनारायण सोनकर द्वारा लिखित आत्मकथा है। जिसका प्रकाशन' शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली की ओर से सन् 2007 ई. में हुआ।

सोनकर हिंदी के युवा दलित नाटककार कहानीकार, कवि, रंगकर्मी के रूप में दलित साहित्य में अपनी अलग पहचान बना चुके हैं। 'नागफनी ' के कुछ अंश 'हंस' पत्रिका में प्रकाशित हो चुके थे।प्रख्यात लेखक व संपादक राजेंद्र यादव ने 'नागफनी'' के बारे में 'हंस'में लिखा है ''अभी तक जितने भी दलित लेखकों की आत्मकथाएँ आई है, उनमें 'हाय मार डाला' की चीत्कार सुनाई पडती है। पहली बार किसी दलित लेखक की आत्मकथा में ऐसी चीत्कार सुनाई नहीं पडती हैं। बल्कि इस में संघर्ष है, विरोध है। जिसे अंग्रेजी में 'साइलेंट रेवेल्युशन'' कहा जाता है।''('' हंस '' सं. राजेंद्र यादव, संपादकीय से उद्घृत सिंतबर, सन. 2007)

प्रस्तुत आत्मकथा 52 परिच्छेदों में विभाजित है। प्रो. कालीचरण स्नेही ने इसी आत्मकथा की भूमिका में लिखा है '' आत्मकथाकार ने जातिवाद के दंश को झेला है।यही कारण है कि, लेखक समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन चाहता है सामंतशाही और ब्राह्मणवाद का खात्मा ही लेखक का अभीष्ट है। जब तक समाज में ऊंच – नीच, गैर – बराबरी, अस्पृश्यता का भाव विद्यमान है, तब तक सामाजिक, समरसता समानता और भाईचारे की चर्चा बेमानी है (''नागफनी''' भूमिका पृ. 02) लेखक ने प्रस्तुत आत्मकथा में अपने बचपन से युवावस्था तक के जीवन प्रमुख घटनाओं को सशक्त ढंग से अभिव्यक्त किया है। 'नागफनी' में लेखक ने अपने समाज का यथार्थ चित्रण अंकित किया है। इसमें उन्होंने दलित जीवन का यथार्थ और सवर्णों की परंपरागत रूप से अन्यायी मानसिकता, उनके द्वारा रचे गए षड्यंत्र, फरेब, छल, अहंकार और शोषण को वाणी दी है। 'नागफनी' के माध्यम से लेखक ने दलितों की अस्मिता, स्वाभिमान एवं सम्मान को पुनर्स्थापित किया है।

'नागफनी' आत्मकथा केवल एक समाज अथवा अकेले सोनकर की आत्मकथा नहीं है। वह सभी दलितों और दलित समाज की आत्मकथा है। 'नागफनी' में कलात्मक अभिव्यक्ति का जबरदस्त रूप नजर आता है। ' नागफनी' के माध्यम से लेखक दलित समाज को अंधविश्वास, धार्मिक आंडबर से मुक्त होने का आवाहन करते हैं।

'नागफनी' में दलित संवेदना अभिव्यक्ति के अनेक प्रसंग दृष्टव्य हैं। आत्मकथा के प्रारंभ में लेखक ने अपने पैतृक ग्राम नसेनियां में 'कुडाहा माई ' के मंदिर के प्रागंण में लगे मेले का प्रसंग चित्रित किया है। दलित स्त्रियाँ इस मेले में भाग नहीं ले सकती थी। लेकिन कुडहा माई के मंदिर के प्रागंण में दलितों द्वारा गालों में साँग निकालने का कार्य किया जाता है। सोनकर ने भी इसमें भाग लिया था। सोनकर की चाची द्वारा जौं के पौधों का कलश सिर पर लिया जाता हैं। जब इस बात का पता सवर्णी को चल जाता हैं। तब वे लोग सोनकर की भाभी का अपमान करते हैं। वहाँ पर इक्कठा दलित सवर्णी के विरोध में खडे होकर सोनकर की भाभी के प्रति किए गए व्यवहार का निषेध करते हैं।

सोनकर ने प्रस्तुत आत्मकथा में सुअर – गाय के अद्भूत युदध का वर्णन वृत्तांत शैली में प्रस्तुत किया है।इस युद्ध में सुअर की जीत हो जाती है। सोनकर पहलवान रहे। उन्हे कुश्ती का शौक रहा गाँव में कुश्ती के दंगल लगते थे। वहाँ पर सोनकर कुश्ती लडने जाते थे। उनकी कुश्ती किसी दलित पहलवान से हो जाती थी। लेकिन वे चाहते थे कि, उनकी कुश्ती किसी सवर्ण पहलवान के साथ हो जाए। उस कुश्ती में वे सवर्ण पहलवान को परास्त कर सके। एक बार सोनकर की कुश्ती ब्राह्मण पहलवान से हो जाती है। उस में ब्राह्मण पहलवान की हार हो जाती है। तब सवर्ण दर्शकों द्वारा विजयी पहलवान सोनकर की पिटाई हो जाती है।

वर्षा के दिनों स्कूल से घर वापस लौटते समय सोनकर और उनके भाई मिश्रा नामक ब्राह्मण के घर में पनाह लेते हैं। वे दोनों भीग गए थे। मिश्रा उन्हें पहनने के लिए कपडे दे देते हैं। रात्रि भोजन

एवं निवास का प्रबंध करते हैं। जब उन्हें पता चलता है कि वे दोनों भाई दलित है। तब उन्हे बेरहमी से पिटा जाता है।

' नागफनी' में सोनकर ने जातीयता अछूतता की वेदना की तडप को जितनी सशक्तता के साथ झेला है। उतनी वेदना किसी अन्य साहित्यकार ने न झेली होगी। एक बार मई महीने में बिंदकी से नसेनिया जाते समय सोनकर को प्यास लग जाती है। तब वे रास्ते पर सवर्ण के कुए पर जाकर वे एक लोटा पानी पीते हैं। जब इस बात का पता सवर्णों को चल जाता तब उन्हे सवर्णों से मार खानी पडती हैं। इस प्रसंग का जिक्र करते हुए सोनकर ने लिखा है '' पानी पीकर मेरी प्यास बुझ गई थी। पानी मेरे शरीर में पेट्रोल का काम कर रहा था। मेरे शरीर रूपी वाहन को मेरा हुदय रूपी ड्राईवर तेजी से भगा रहा था। पैर रूपी पहिए तेजी से कच्ची सडक पर दौड रहे थे। मैं उबड – खाबड सडक को पार करते हुए तेजी से अपने गाँव पहुंच गया''। ('नागफनी ' पृ. 27) सवर्णों के सामने अछूत चारपाई पर बैठ नहीं सकते। एक बार सोनकर अपने आँगन में चारपाई पर बैठे थे। तब वहाँ पर शिवभजन अवस्थी आता है। सोनकर उन्हे देखकर चार पाई से नीचे नहीं उतरते। यह प्रसंग अवस्थी को अपमानजनक लगा। तब अवस्थी और गाँव के सवर्ण सोनकर पर जान लेवा हमला करते हैं। इस हमले में सोनकर की भाभी उनकी जान बचा लेती हैं। सवर्ण सोनकर को माफी मांगने के लिए कहते हैं। तब सोनकर निडरता से माफी मांगने से इंकार करते हैं।

शिवभजन अवस्थी और सोनकर की मानो परंपरागत जातीय दुश्मनी थी। शिवमंदिर की गुंबदों की सफेदी करने के लिए अवस्थी ने सोनकर को रस्सी के सहारे गुबंद पर चढाया था। सोनकर गुबंदी की पुताई करके सही सलामत नीचे वापस आ जाते हैं। सोनकर को रामचरितमानस पाठ में भाग लेने पर अवस्थी द्वारा अपमानित किया जाता है। यहाँ उल्लेखनीय है कि मंदिर की पुताई के लिए सिर्फ दलित, पाठ में भाग लेने के लिए दलितों को मनाई। गाँव के सवर्णों द्वारा दलित समाज पर बहिष्कार किया जाता है। गाँव, खेत में उन पर प्रतिबंध लगाया जाता है। तब सोनकर के नेतृत्त्व में गाँव समस्त दलित एक होकर सवर्णों के द्वारा लगाए गए प्रतिबंध का सामना करते हैं। लेकिन वे अपनी अस्मिता बचाए रखते हैं।

सोनकर ने अन्य दलित जाति के लोगों के शोषण पर प्रकाश डाला है। गाँव के हरिशंकर अवस्थी सवर्ण हैं। उन्होंने भदइया चमार को बंधक बनाया हैं। वे उसका शारीरिक और मानसिक शोषण करते हैं। एक बार अवस्थी भदइया को बेरहमी से पीठ रहा था। तब सोनकर गाँव के समस्त दलितों का संघटित करके अवस्थी को विरोध करते हैं और अवस्थी के चंगुल से भदइया को मुक्ति दिलाते हैं।

सवर्णों के सामने उच्चशिक्षित दलित कूडा – करकट के समान होते हैं। इस पक्ष का चित्रण ' नागफनी ' में आया है। सोनकर और उनके भाई उच्चशिक्षित है। हरिशंकर अवस्थी ने सोनकर और उनके भाईयों को केवल वे दलित है, इसलिए उन्हें टोकरी भर कंडे उठाने के लिए मजबूर कर दिया। उच्चशिक्षित दलित युवाओं का सवर्णों द्वारा किया गया यह अपमान ही है।

सोनकर के गाँव में सामाजिक कुरीतियाँ बडे पैमाने पर थी। होली के अवसर पर सवर्ण तथा दलित स्त्रियों को भद्दी गालियां दी जाती थी। सोनकर को यह कुरीती अच्छी नहीं लगी। उन्होंने दलित समाज में जागृति करके इस कुरीति को जड से उखाड दिया।

'नागफनी' में सोनकर ने यह स्वीकार किया है कि, जननायक डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के कार्यों से ही मुझे संघर्ष करने की प्रेरणा मिली है। सोनकर ने प्रस्तुत आत्मकथा में मेहतर जाति की छुआछूत समस्या को उठाया है। उन्होंने ब्राह्मण परिवारों में स्त्रियों के होने वाले शोषण पर भी गंभीर चिंता प्रकट की है। गाँव के सवर्ण गुंडागर्दी करन वाले दलित लोगों का सहारा लेकर दलित समाज में ही कैसा आतंक मचा देते हैं। इसका अच्छा उदाहरण इंद्रजित सिंह है। लखनसिंह जैसा व्यक्ति दुर्बल, दीन–दलित, शोषित, पीडित स्त्रियों पर अत्याचार करके उन्हे अपनी हवस का शिकार बना देता है। लेकिन जगदम्बा की पत्नी लखनसिंह की हत्या करके उसके अत्याचार से पीडित–शोषित समाज को भयमुक्त बना देती हैं। गुंदो महतो और हफीज मियाँ के प्रसंग पाठकों पर हावी हो जाते हैं।

अभावग्रस्त परिस्थिति में सोनकर ने अपनी शिक्षा कैसी पूर्ण की इस पक्ष का प्रभावशाली अंकन प्रस्तुत आत्मकथा में पढने मिलता है। सोनकर को पल प्रति पल जातीय दंश को झेलना पडा। अपमान रूपी जहर के घूँट को पीना पडा–पचाना पडा है। उन्होंने अपने सामाजिक कार्य का प्रारंभ मलिन बस्ती के बच्चों को अवैतनिक रूप से पढाकर शुरू किया था। सोनकर के करीबी रिश्तेदारों को जो सरकारी सेवाओं में वरिष्ठ अधिकारी हैं। उन्हें भी जातीय छुआछूत को किस प्रकार सहना पडा है इस पक्ष पर सोनकर ने प्रकाश डाला हैं। उनके रिश्तेदार आर. डी. सोनकर के विरोध में रचा गया षड्यंत्र इसका अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

सोनकर जहाँ–जहाँ पर चले गए है, वहाँ–वहाँ पर उनकी जाति वहाँ पर गई है। उन्हे नौकरी के स्थान पर, कार्यालयों में केवल दलित होने के कारण अवमान सहना पडा है। उनका जन्म ग्राम नसेनियां में हुआ वे आज भी अपने गांव को नहीं भूल पाये। इसका कारण उनके पैत्तृक ग्राम के प्रति उन्हें विशेष लगाव है। इस पक्ष पर अपनी कलम चलाते हुए उन्होंने 'नागफनी' में लिखा है – "देहातों में भयंकर गरीबी है। जिनके पास खेत नहीं है वे दूसरों के खेतों पर मजदूरी करके अपना व अपने परिवार का भरण – पोषण करते हैं। देहातों में अधिकतर दलितों को घर मिट्टी के बने होते हैं। बरसात आने के पहले ईख के पत्तों से बना छप्पर घरों की दीवारों पर बनाकर डाला जाता है। धान के पयार से भी छप्पर बनाया जाता है। वर्षा के दिनों में छतों से पानी घर के अंदर टपकता रहता हैं। छतों से टपक रहे पानी को बाल्टी के अंदर गिरने दिया जाता है। टप, टप, टप की आवाज रात्रि में एक ऐसा संगीत पैदा करती है। जिस में यह रहस्य छिपा होता है कि जिंदगी बाल्टी में गिर रही बूंदों की तरह है। जिनमें गरीबी, लाचारी, विपदाएँ, श्शोषण सभी पानी की बूंदें बनकर के गरीबों के घरों में प्रवेश करती है। गरीबों के दिलों में प्रवेश करती है।" – (नागफनी पृ. 110)

सोनकर ने यह निष्कर्ष निकाला है कि, जातिवाद की जडें–पढे लिखे शहरी सवर्णों में काफी गहरी हैं। नोकरी के स्थान पर सोनकर को इस पक्ष की गहरी अनुभूति हुई। सोनकर ने प्रत्यक्ष रूप से यह अनुभूति ली थी कि उन्हे मंचीय कवि के रूप में जो लोकप्रियता मिल रही थी। उससे उनके कई मित्र मत्सर की अग्नि में जल रहे थे। सोनकर दलित कवियों की राजनीति के शिकार

बन चुके हैं। जिसके कारण उनकी प्रतिभा का गला घोट देने का कार्य उनके विरोधियों ने किया था। उनकी घिनौनी राजनीति से तंग आकर उन्होंने 'दलित साहित्य सांस्कृतिक अकादमी, भारत' इस संस्था की नींव डाली। जो दलित साहित्य और सांस्कृतिक क्षेत्र में काफी सराहनीय कार्य कर रही हैं।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा दिया गया विचार 'शिक्षित बनो, संगठित बनो, संघर्ष करो'' का अक्षरशः पालन सोनकर अपने व्यक्तिगत जीवन में किया हैं। उनके विचारों पर चलते हुए वे उच्च विद्याविभूषित हए अपने गाँव के दीन, दलित श्शोषित पीडित सर्वहारा वर्ग पर सवर्णों द्वारा होने वाले अन्याय, अत्याचार के विरोध में संग्रहित होकर संघर्ष किया। दलित बांधवों को सवर्णों की दासता से मुक्त किया। सोनकर ने प्रस्तुत आत्मकथा में स्वीकार किया है कि, उनके व्यक्तित्त्व के निर्माण जननायक डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों का बहुत बडा योगदान रहा हैं। सोनकर ने मलिन बस्ती के बच्चों को पढाकर दलित समाज में शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया है। यदि सोनकर जैसे युवा दलित शिक्षा प्रेमी इस प्रकार मलिन बस्ती में जाकर शिक्षा का प्रचार–प्रसार करेंगे। तो निश्चित ही समस्त भारत

वर्ष शत–प्रतिशत रूप से साक्षर भारत बन जाएगा। सोनकर द्वारा दलित मुक्ति संघर्ष करने के विचार से दीन, दलित, शोषित, पीडितों ,का जीवन सुखी और समृद्ध बन सकता है। वर्तमान युग में बलशाली भारत निर्माण के लिए दलित उत्पीडन से मुक्त भारत का निर्माण होना अनिवार्य हैं। सोनकर के विचारों में मानव निर्मित जाति–पांति की दीवारों को तोडा नहीं जाता, और भारत के मुख्य प्रवाह में दलितों,शोषितों को जब तक शामिल नहीं किया जा सकता तब तक बलशाली भारत निर्माण नहीं हो सकता।

निष्कर्ष – रूपनारायण सोनकर द्वारा लिखित 'नागफनी' आत्मकथा में अभिव्यक्त दलित संवदेना का अनुशीलन करनेपर प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है। 'नागफनी' शीर्षक संक्षिप्त, अर्थबोधपूर्ण, आकर्षक और सारगर्भित है। विवेच्य आत्मकथा में रूपनारायण सोनकर ने अपनी बाल्यावस्था से लेकर युवावस्था तक के जीवन की प्रमुख घटना, प्रसंगों का चित्रण किया है। प्रो. कालीचरण स्नेही, राजेंद्र यादव जैसे विद्वजनों ने 'नागफनी' आत्मकथा की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। 'नागफनी' सोनकर की निजी अनुभूतियों की गाथा होते हुए भी समस्त दलित समाज को अंधविश्वास, सडी गली मान्यताओं, बेगार, सवर्णों द्वारा दिया जाने वाली उत्पीडन से मुक्ति दिलाने की भीमगाथा है। सोनकर का व्यक्तित्त्व सवर्णों के घात–प्रतिघातों से संघर्ष करता हुआ युवा दलित पीढी के सामने एक ऐसा आदर्श स्थापित करता है। जो डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के सपनों में था। 'नागफनी' में सोनकर ने सडीगली मान्यताओं का विरोध करके समाज के सामने वैज्ञानिक दृष्टिकोण को रखा है। सोनकर स्त्रियों और दलितों पर होने वाले अत्याचार, अन्याय के प्रति काफी सचेत लगते हैं। उनका यह रूप एक समाज सेवी और सजग प्रहरी का ही रहा हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि दलित मुक्ति का रास्ता 'नागफनी' से होकर जाता है।

संदर्भ–ग्रंथ

1) 'नागफनी' – रूपनारायण सोनकर
शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन. 2007 ई.

2) ''हंस'' सं. राजेंद्र यादव, अंक सितंबर, 2007
प्रकाशक – अक्षर प्रकाशन, प्रा. लि. दिल्ली।